# क्या मानव–सेवा हेतु हिंसा को प्रोत्साहन उचित है?

अहिंसा में विश्वास रखने वाला अहिंसक व्यक्ति हजारों रुपयों का प्रलोभन देने के बावजूद जानबूझ कर एक चिंटी को भी नहीं मार सकता। जिन पदार्थों में जानवरों के अवयव होते हैं उनको खाने अथवा उपयोग में लेने से यथासंभव परहेज करता है। उसके घर कोई अतिथि आए तो उसको सात्विक भोजन कराना अपना कर्तव्य समझता है। यदि अतिथि मांसाहार हेतु आग्रह करें तो, स्पष्ट मना कर देता है। मानव सेवा के नाम पर मांसाहार द्वारा अतिथि का स्वागत उसको स्वीकार नहीं। जैन संत एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक सूक्ष्म से सूक्ष्मतम जीवों तक की हिंसा से पूर्णरुपेण बचने हेतु कठिनतम परीषह सहन करते हैं। अहिंसा का यथा संभव पूर्ण रूपेण पालन उनके जीवन में श्वास के समान मुख्य होती है। सामायिक, स्वाध्याय ध्यान, प्रार्थना, जप, तप आदि शुभ प्रवृतियाँ भोजन एवं पानी के समाज अन्य प्रमुख प्राथमिकताओं के समान हो सकती है।

आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान की जानकारी हेतु करोड़ों जानवरों का प्रतिदिन विच्छेदन किया जाता है। दवाईयों के निर्माण और उनके परीक्षण हेतु जीव-जन्तुओं को निर्दयता, क्रूरतापूर्वक यातना दी जाती है। किसी को दु:ख देकर सुख और शांति कैसे मिल सकती है? यह तो पशुता एवं अनैतिकता का लक्षण है। जैसा करेंगे वैसा फल मिलेगा, यह कर्म का सनातन सिद्धान्त है। प्रकृति के न्याय में देर हो सकती है परन्तु अन्धेर नहीं।

प्रभावशाली अहिंसक उपचारों का विकल्प होते हुए भी जब अहिंसा प्रेमी चिकित्सा के क्षेत्र में होने वाली हिंसा का अज्ञानवश समर्थन करते हैं तो उनका आचरण अहिंसा से ज्यादा सेवा को महत्व देने का होता है । सेवा कर्म निर्जरा का सशक्त माध्यम होता है और हिंसा कर्म बंधन का प्रमुख कारण। अत: सेवा हेतु उपयोग में लिये जाने वाले साधनों, उपकरणों का अहिंसक होना अनिवार्य है। अपवित्र एवं हिंसक साधनों पर आधारित अमूल्य मानव सेवा जैसा अच्छा कार्य भी उचित एवं विवेकपूर्ण नहीं कहा जा सकता।

परन्तु आज अहिंसा प्रेमियों द्वारा भी चिकित्सा में अहिंसा न केवल उपेक्षित एवं गौण होती जा रही है, अपितु ऐसी हिंसा को आवश्यक बतलाने का प्रयास भी किया जा रहा है। क्या ऐसा प्रयास परोक्ष रूप से बूचड़खानों का सहयोग करना एवं पशु क्रूरता को प्रोत्साहन देना नहीं है?अत: उपचार हेतु प्रत्यक्ष या परोक्ष हिंसा करना/करवाना अथवा हिंसा करवाने वालों को प्रोत्साहन देना, कर्जा चुकाने के लिये ऊँचें ब्याज पर कर्जा लेने के समान नासमझी है।


– डॉ. चंचलमल चोरडिया

चोरडिया भवन, जालोरी गेट के बाहर,

थार हैण्डलुम के सामने, गोल बिल्ड़िग रोड़, जोधपुर-342003 (राज.)

(फोन) : 0291-2621454,2632267(घर), 2435471 (फैक्स),094141-34606(मोबाइल)

E-Mail :cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website: www.chordiahealthzone.com